दिनकर का सनातन दर्शन

— डॉ. ध्रुव कुमार

यह प्रश्न प्रायः उठता है कि सनातन का दर्शन आखिर क्या है, और हिंदू होने के साथ कौन-कौन से गुण एक हिंदू के अंदर समाज के माध्यम से आते हैं, जिस वजह से वे साम्राज्यवादी शक्तियों के निशाने पर रहते हैं? जब मैं इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ने की कोशिश करता हूं, तो मेरा सामना कई विचारकों से होता है। स्वयं के प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ते हुए मुझे किसी भी पंथ या पूर्वग्रह से परे ऐसे विचारकों को पढ़ने का अवसर मिला, जिनके विचारों ने समाज पर व्यापक प्रभाव डाला। यदुनाथ सरकार, सीताराम गोयल, राम मनोहर लोहिया, रमेश चंद्र मजूमदार व रामधारी सिंह दिनकर जैसे अनेक विचारकों के सनातन दर्शन को पढ़ने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा, कि सनातन कोई साधारण विचार या दर्शन नहीं, अपितु यह स्वयं एक जीवन-दृष्टि है। एक ऐसी जीवन शैली जो समावेशिता को प्रदर्शित करती है। एक ऐसी जीवन शैली जो सहिष्णुता, उदारता व धर्मनिरपेक्षता जैसे नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करती है।

अपने अध्ययन के दौरान राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी के सनातन दर्शन से मैं काफी प्रभावित हुआ। इस आलेख में मैं अपनी सीमित समझ के अनुसार दिनकर के सनातन दर्शन पर कुछ बातें साझा करूँगा। हममें से अधिकांश लोग दिनकर को उनके ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति का आह्वान करने वाली कविताओं के लिए जानते हैं। एक तरफ उन्होंने अपने उत्तेजक और गर्जन से भारी रचनाओं के साथ हिंदी साहित्य को समृद्ध किया, तो वहीं दूसरी तरफ दिनकर को एक गहरे चिंतक के रूप में भी देखा जाता है। संस्कृति के चार अध्याय, हमारी सांस्कृतिक एकता, भारत की सांस्कृतिक कहानी, अर्धनारीश्वर, धर्म नैतिकता व